खण्ड-क

1. (i) (ग)
(ii) (क)
(iii) (ख)
(iv) (घ)
(v) (क)

2. (i) (क)
(ii) (क)
(iii) (ख)
(iv) (ख)
(v) (क)

3. (i) (ख)
(ii) (क)
(iii) (ग)
(iv) (घ)
(v) (क)

4. (i) (ग)
(ii) (ग)
(iii) (ख)
(iv) (क)
(v) (ख)

खण्ड-ख

5. (क) मिश्र वाक्य
(ख) जब मैं जल्दी से बाहर गया तब ओले देखने लगा।
(ग) नवाब साहब ने कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखा और स्थिति पर गौर करते रहे।

6. (क) सभी दर्शकों के द्वारा / द्वारा नाटक की प्रशंसा की गई।
(ख) प्रेमचंद ने गोदान लिखा।
(ग) उससे अब भी बैठा नहीं जाता।
(घ) इन मच्छरों में रातभर कैसे सोएँगे।

7. (क) पद-परिचय में अनिवार्य रूप से व्याकरणिक कोटि का भेद और एक अन्य बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)
बालगोबिन भगत की - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक।
उस_- सार्वनामिक विशेषण, 'दिन'-विशेष्य, एकवचन, पुल्लिंग।
जब - अव्यय, कालवाचक क्रियाविशेषण, 'मरा' क्रिया का विशेषण
मरा - अकर्मक क्रिया, भूतकाल, कर्तृवाच्य, पुल्लिंग, एकवचन, 'मर' धातु।

8. (क) (i) शृंगार रस
(ii) भयानक रस
(iii) हास्य रस
(ख) उत्साह

9. (क) - व्यक्तित्व के सकारात्मक गुण समाप्त होने लगे।
- चिड़चिड़े हो गए थे।
- स्वभाव शक्की बन गया।
- क्रोधी स्वभाव।
(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
(ख) - अच्छी आर्थिक स्थिति।
- नवाबी ठाठ-बाट।
- समाज में प्रतिष्ठित।

(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
(ग) - अपनों के हाथों विश्वासघात के कारण।
- आर्थिक विवशताओं के कारण।
- अधूरी महत्वाकांक्षाओं के कारण। (किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

अथवा

(क) - निठल्ला नहीं बैठता।
- जरूरत पूरी होने पर भी आंतरिक स्वार्थ से ऊपर उठकर कुछ और जानने की जिज्ञासा।
- आविष्कार के लिए प्रेरणा। (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
(ख) किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर खोज नहीं की बल्कि अंतःप्रेरणा से प्रेरित होकर नए तथ्यों की खोज की।
(ग) क्योंकि पेट भरना / तन ढँकना केवल भौतिक आवश्यकताएँ हैं। अपने से आगे विकास करने वाला मानव संस्कृत है।

10. (क) - तब स्त्रियाँ संस्कृत नहीं बोल सकती थीं, इसलिए प्राकृत में बात करने का चलन था।
- संस्कृत न बोलना अपढ़ या गँवार होने का प्रमाण नहीं था।
-सभी शिक्षित संस्कृत ही बोलते थे, इसका भी कोई प्रमाण नहीं है।
- यदि प्राकृत अशिक्षितों की भाषा थी, तो बौद्ध व जैन धर्म के हज़ारों ग्रंथों की रचना प्राकृत में क्यों की जाती?
- उस समय संस्कृत सर्वसाधारण की भाषा नहीं थी। अतः जो लोग संस्कृत नहीं बोल सकते थे, उनके लिए प्राकृत का विधान था। (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
(ख) - प्राचीन संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों से अनपढ़ों की भाषा में बातें कराई गई हैं।
- इतिहास-पुराणादि में उनको पढ़ाने की नियमबद्ध प्रणाली नहीं मिलती।
- स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी होता है।
- शकुंतला कम पढ़ी-लिखी थी, फिर भी गँवारों की भाषा में टूटे-फूटे श्लोक के माध्यम से दुष्यंत को अत्यंत कटु वाक्य कहे। (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)
(ग) - उन्होंने समाज में नारी की स्थिति को देखकर उनकी शिक्षा के महत्व को समझ लिया था। जब तक स्त्री शिक्षित नहीं होगी, तब तक समाज एवं परिवार की उन्नति नहीं हो सकती। वे विवेक का प्रयोग कर सड़-गल चुकी परंपराओं को त्यागकर केवल उपयोगी और महत्वपूर्ण परंपराओं को स्वीकारने का पक्ष लेते हैं।
(घ) - सच्चे सुर की नेमत। क्योंकि सच्चे कलाकार थे, हमेशा सीखते रहते थे, पूर्णता पाने की ललक / इच्छा रहती थी।
- विनम्रता, ईश्वर पर आस्था, सच्चे संगीत के साधक थे।
(ङ)- खानपान में बदलाव।
- पुरानी परंपराओं का लुप्त होना।
- सांप्रदायिक सद्भाव में कमी।
- संगतकारों के प्रति सम्मान में कमी।
- रियाज़ में कमी। (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

11. (क) आपके शील स्वभाव को कौन नहीं जानता। आप अपने माता-पिता के ऋण से तो भली-भाँति मुक्त हो गए हैं। अब गुरु-ऋण रह गया है, जो हृदय को दुख दे रहा है।
(ख) परशुराम के गुरु शिव के ऋण की बात। वे किसी हिसाब-किताब करने वाले को बुला लें, तो लक्ष्मण अपनी थैली खोलकर उनका ऋण चुका देंगे।
(ग) परशुराम पर व्यंग्य कर रहे हैं कि किस प्रकार वे माता-पिता के ऋण से मुक्त हुए।

अथवा

(क) मुख्य गायक के बुझे हुए मद्धिम स्वर को 'राख जैसा' कहा गया है, क्योंकि स्वर को ऊँचा उठाते हुए जब उसका गला बैठने लगता है, तो उसका स्वर उत्साहहीन होकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे आग बुझी होने के बाद राख होती है।
(ख) जब मुख्य गायक अपने स्वर को ऊँचा उठाता है तो उसका गला बैठने लगता है और ऐसा लगता है कि उसकी प्रेरणा उसका साथ छोड़ रही है, उसका उत्साह मंद पड़ जाता है।
(ग) मुख्य गायक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

12. (क) मृग को चमकती रेत में जल का आभास होता है और वह उसके पीछे दौड़ता-फिरता है किंतु वह उसका भ्रम ही होता है। मानव भी जीवन-भर इसी प्रकार सुख-ऐश्वर्य के पीछे दौड़ता-फिरता है।
(ख) यदि अवसर बीतने पर भी लक्ष्य की प्राप्ति होती है तो उसे स्वीकार कर आनंद उठाना चाहिए।
(ग) बेटी को, क्योंकि वह अभी कच्ची उम्र की है, उसे दुख का अनुभव नहीं है।
(घ) परंपरागत माँ अपनी बेटी को सब कुछ सहकर दूसरों की सेवा करने की सीख देती है। लेकिन कविता में माँ सीख देती है कि लड़की के गुणों को बनाए रखना, कमज़ोर मत बनना। वह दहेज के लिए जलाए जाने के खतरे के बारे में लड़की को

आगाह करती है। गहने, वस्त्र आदि बंधन है। वह शोषण का पात्र न बने।

(ङ) दहेज के लालच में लड़की को प्रताड़ना देना, हत्या या आत्महत्या के लिए प्रेरित करना। उसे कमज़ोर समझकर मान-सम्मान न देना।

13. स्वयं करे

खण्ड-घ

14. स्वयं करे

15. स्वयं करे

16. स्वयं करे